है। भारत में केन्द्रीय बैंक के अंतिम ऋण दाता का संचालन Reserve Bank of India निभाता है।

उपर्युक्त दोनों प्रधान कार्यों के अलावा केन्द्रीय बैंक के कुछ गौण कार्य भी है। खासकर विकासशील देशों में जहाँ कि मौद्रिक नीति का मुख्य उद्देश्य देश की आर्थिक विकास की गति को तेज करना है। अनेक निम्नलिखित गौण कार्य भी होते हैं —

(i) केन्द्रीय बैंक आर्थिक तथ्यों एवं आकड़ो को एकत्रित करता है। जैसे भारत में Reserve Bank of India हर तीन महीने बाद सभी मौद्रिक एवं आर्थिक तथ्यों से सम्बन्धित बुलेटीन जारी करता है।

(ii) केन्द्रीय बैंक कृषि एवं औद्योगिक विकासशील प्रोत्साहित करता है। उसके लिए ऋण की व्यवस्था करता है। भारत में यह Reserve Bank of India का महत्त्वपूर्ण कार्य हो गया है।

(iii) पूँजी निर्माण की दर को बढ़ाने के लिए सस्ती मुद्रा नीति भी अपनाती है। जिसे Keynes ने cheap money policy कहा है।

केन्द्रीय बैंक का कौन सा काम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, यह कहना कठिन है। क्योंकि सभी काम एक-दूसरे के पूरक है। Hawtrey ने अन्तिम ऋण दाता के काम को अधिक महत्त्वपूर्ण कहा है। Smith पत्र मुद्रा निर्गमन के पूर्ण एकाधिकार को ही केन्द्रीय बैंक का महत्त्वपूर्ण कार्य कहा है। W.A. Shaw ने साख नियंत्रण और Willis ने समाशोधन कार्य पर अधिक जोड़ दिया है। DeCock ने ठीक ही कहा है कि व्यवहार में किसी एक विशिष्ट

समन्वय करना केन्द्रीय बैंक के सारे कार्यों में से सबसे प्रधान है। इन्हीं के शब्दों में Clearing is the main operation of Central Banking.

केन्द्रीय बैंक के द्वारा समाशोधन की क्रिया प्रदान करने से केवल मुद्रा एवं पूंजी के प्रयोग में मितव्ययिता नहीं आती वरन् स्रोत किसी भी समय देश की तरलता की मात्रा का परिवर्तन का पता चल जाता है। जिसके सम्बन्ध में जानकारी रखना किसी भी केन्द्रीय बैंक के लिए आवश्यक होता है। इस प्रकार, यह कार्य भी केन्द्रीय बैंक का महत्वपूर्ण कार्य है। भारत में जिन शहरों में Reserve Bank of India की शाखा नहीं है। उस शहर में समाशोधन का कार्य State Bank of India की देख-रेख में रहता है।

6. सारव नियंत्रण का कार्य :→

केन्द्रीय बैंक का एक प्रधान कार्य देश में साख मुद्रा का नियंत्रण है।

'आधुनिक अर्थव्यवस्था साख सृजन की आधार शिला पर खड़ी है। यदि साख सृजन से औद्योगिक विकास में बहुत सहायता मिली है तो दूसरी ओर इन अनियंत्रित साख सृजन से मुद्रा स्फीति एवं मुद्रा संकुचन का भय रहता है। जिसके चलते साख सृजन वरदान के बदले अभिशाप हो जाती है। अतः आधुनिक युग में केन्द्रीय बैंक का मुख्य कार्य साख नियंत्रण हो गया है।

केन्द्रीय बैंक परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों विधियों से साख नियंत्रण करता है। परिमाणात्मक विधि के अन्तर्गत बैंक दर

1 पत्र मुद्रा जारी करने का कार्य :→

बैंक का प्रधान कार्य देश की आवश्यकताओं केन्द्रीय
के अनुसार पत्र-मुद्रा जारी करना है। हर देश
में केवल केन्द्रीय बैंक को ही पत्र मुद्रा जारी
करने का एकाधिकार दिया गया है। भारत में
यह अधिकार Reserve Bank of India को
प्राप्त है। इसी काम के कारण पहले केन्द्रीय बैंक
को Bank of Issue कहा जाता था। सच पूछा
जाए तो केन्द्रीय बैंक का विकास ही पत्र मुद्रा जारी
करने का दायित्व किसी खास बैंक को सौंपने के
दृष्टिकोण से हुआ है।

पहले स्वर्ण मान के समय पत्र-मुद्रा
भी स्वर्ण भंडार को ध्यान में रखकर निर्गत किया
जाता था। किन्तु, अब अलग-अलग देशों में
पत्र मुद्रा जारी करने का अलग-अलग सिद्धान्त है
भारत में एक सौ पन्द्रह करोड़ रुपये का सोना
तथा 85 करोड़ रुपये का विदेशी मुद्रा का सुरक्षित
भंडार रखकर Reserve Bank of India जितना
भी चाहे पत्र मुद्रा जारी कर सकता है। सिर्फ
एक रुपये का नोट भारत सरकार का वित्त
मंत्रालय निर्गत करता है। इसलिए दो से सौ
रुपये के नोट तक Reserve Bank of India
Governor का हस्ताक्षर होता है। सिर्फ एक रुप
के नोट पर भारत के वित्त सचिव का हस्ताक्षर
होता है। भारत में पत्र मुद्रा जिस सिद्धान्त से
निर्गत होता है Fixed Reserved System कहते
है। केन्द्रीय बैंक कितनी मात्रा में पत्र मुद्रा ज
करेगा ; यह केन्द्रीय सरकार निर्धारित कर
है। सरकार के ही निर्देशानुसार Reserve Ba
of India पत्र मुद्रा निर्गत करता है। इसका प्र
कार्यालय नासिक (बम्बई) में है।

2. सरकार के बैंकर एजेन्ट तथा सलाहकार
रूप में कार्य :→

जिसकी स्थापना 1694 ई० में हुई .... बाद 1800 ई० में Bank of France, 1814 में Bank of Netherland उसके बाद अन्य देशों में भी केन्द्रीय बैंक स्थापित होने लगे। 1920 ई० में ब्रुसेल्स सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि हर देश में अनिवार्य रूप से एक केन्द्रीय बैंक होना चाहिए। इसी आलोक में 1935 ई० में भारत में Reserve Bank of India के रूप में स्थापित हुआ। जिसका राष्ट्रीयकरण 1949 ई० में हुआ। आज Reserve Bank of India संसार के अग्रणी केन्द्रीय बैंकों में है जिसमें I.M.F की सदस्यता राशि रखी जा सकती है।

केन्द्रीय बैंक को विभिन्न अर्थशास्त्री ने अपने-अपने दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है Prof. Kent के अनुसार, " केन्द्रीय बैंक एक ऐसी संस्था है जिसे सार्वजनिक हित में मुद्रा की मात्रा में विस्तार एवं संकुचन का कार्य सौंपा जाता है जैसे-जैसे केन्द्रीय बैंक के कार्यों का विस्तार हो रहा है। इसकी परिभाषा भी बदलती जाती है। वास्तव में, केन्द्रीय बैंक की धारणा इसकी परिभाषा से नहीं बल्कि उसके कार्यों से स्पष्ट होता है।

केन्द्रीय बैंक के कार्यों का मौलिक विश्लेषण Prof. D.H. DE COCK ने अपनी पुस्तक Central Banking (Page-1) में किया है। उनके अनुसार केन्द्रीय बैंक के निम्नलिखित सात कार्य है।

1. पत्र मुद्रा जारी करने का कार्य।
2. सरकार के बैंकर एजेन्ट एवं सलाहकार के रूप में कार्य।
3. बैंको के बैंक के रूप में कार्य।
4. देश के अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा के संरक्षक एवं व्यवस्था के रूप में कार्य।
5. बैंकों के समाशोधन गृह के रूप में कार्य।
6. साख नियंत्रण का कार्य।
7. अंतिम सहायता के रूप में कार्य।

Dr. AMAR KRISHNA
Deptt. of Economics
SRAP College, Bara Chakia

(05) केन्द्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन करें। आप किस काम को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और क्यों ?

Or.

केन्द्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के सन्दर्भ में करें ?

Discuss the main functions of a Central Bank with special reference to the Reserve Bank of India.

आधुनिक मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था की आधारशिला केन्द्रीय बैंक है। आज संसार के हर देश में देश की बैंकिंग व्यवस्था के शीर्ष स्थान पर एक केन्द्रीय बैंक होता है। जिस पर सरकार का स्वामित्व एवं नियंत्रण होता है। केन्द्रीय बैंक का महत्व आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था में इतनी अधिक है कि Willrogers के अनुसार, सृष्टि के प्रारम्भ से तीन महान आविष्कार हुए हैं। आग, चक्र तथा केन्द्रीय बैंक। उन्हीं के शब्दों में :— "There has been three great inventions in science from the beginning time, fire, the ~~[illegible]~~ wheel and the Central Banking".

अगर यह कहा जाए कि हर देश की मौद्रिक और बैंकिंग व्यवस्था केन्द्रीय बैंक के चारों ओर चक्कर काटती हो तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

केन्द्रीय बैंक का विकास वस्तुतः वर्तमान शताब्दी में ही हुआ। इसके पूर्व भी तो कई देशों में केन्द्रीय बैंक स्थापित हो चुके थे, किन्तु उनकी धारणा स्पष्ट नहीं थी। विश्व का सबसे प्राचीन केन्द्रीय बैंक Bank of England है

केन्द्रीय बैंक सरकार का
आर्थिक परामर्शदाता एजेन्ट तथा बैंकर
के रूप में कार्य करता है। अर्थात केन्द्रीय
बैंक सरकार का Friend Philosopher and
Guide तीनों होता है। केन्द्रीय बैंक सरकार
को आर्थिक नीतियां, विदेशी मुद्रा तथा
मौद्रिक नीति के सम्बन्ध में समय-समय
पर परामर्श देता है। विभिन्न देशों से
आवश्यकतानुसार सरकार के लिए ऋण की
व्यवस्था करता है। केन्द्रीय बैंक सरकार को
बैंक के रूप में वह सभी कार्य करता है जो
व्यावसायिक बैंक अपने ग्राहकों के लिए
करता है। इसलिए इसे Government बैंक
कहा जाता है।

केन्द्रीय बैंक सरकार के समस्त
लेन-देन का हिसाब रखता है। सरकार की सम्पूर्ण
आय इसी में जमा होती है। सरकारी खर्च
के लिए मुद्रा भी इसी बैंक से निकाला
जाता है। यह सरकार को अल्पकालीन
ऋण भी देता है। केन्द्रीय बैंक सरकार
के लिए विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय भी
करता है। जब सरकार को जनता से ऋण
लेना होता है तो वह केन्द्रीय बैंक की शरण
में जाता है। Decock ने अपनी प्रसिद्ध
पुस्तक Central Banking में ठीक ही कहा
है कि केन्द्रीय बैंक सरकारी बैंक का कार्य
केवल सुविधा तथा मितव्ययिता की दृष्टि से
नहीं करता बल्कि यह कार्य इसलिए भी करता
है कि सार्वजनिक वित्त एवं मौद्रिक कार्यों
में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। मौद्रिक नीति
एवं वित्तीय नीति एक-दूसरे के पूरक होते हैं।
वस्तुतः केन्द्रीय बैंक सरकार का घनिष्ट मित्र
दार्शनिक और पथ-प्रदर्शक होता है।

भारत में यह काम Reserve
Bank of India करता है। जिन नगरों में

उस मुद्रा को अपने कोष से निकालकर बेचने लगता है। परिणाम स्वरूप उस विदेशी मुद्रा के मूल्य में कमी आने लगती है। इसके विपरीत यदि विदेशी मुद्रा का मूल्य घट जाता है तो केन्द्रीय बैंक उस विदेशी मुद्रा को खरीदने लगता है। फलस्वरूप इस मुद्रा में तेजी आने लगती है। इस प्रकार केन्द्रीय बैंक उस विदेशी मुद्रा के मूल्य में नियंत्रण एवं स्थिरता बनाए रखता है। विदेशी मुद्रा सम्बन्धी सरकार की नीति केन्द्रीय बैंक को कार्यान्वित करता है। इस दायित्व को पूरा करने के लिए केन्द्रीय बैंक विदेशी मुद्राओं का संरक्षण करता है। I.M.F. से प्रत्यक्ष सम्बन्ध केन्द्रीय बैंक का होता है। अन्य बैंको को नहीं। भारत में सभी कार्य Reserve Bank of India द्वारा सम्पादित होता है।

5. बैंकों के समाशोधन गृह के रूप में कार्य :→

केन्द्रीय बैंक व्यावसायिक बैंक के समाशोधन गृह के रूप में भी काम करता है। इस कार्य को सर्वप्रथम Bank of England द्वारा 1859 ई० में सम्पन्न किया गया था। कालान्तर में अन्य केन्द्रीय बैंक भी इस कार्य को करने लगे। भारत में स्थापना काल से ही Reserve Bank of India समाशोधन गृह के रूप में कार्य करता है। समाशोधन से बैंको का पारिश्रमिक भुगतान सरल हो जाता है। मुद्रा के उपयोग में मितव्ययिता आती है। केन्द्रीय बैंक के पास सभी सम्बन्धित बैंको के खाते खुले रहते हैं। जिनमें ये बैंक कुछ न कुछ कोष के रूप में अवश्य रखते हैं। इस तरह इन बैंकों के एक दूसरे पर जारी किये गये चेकों का भुगतान समाशोधन गृह के रूप में आसानी से हो जाता है। ऐसा करने से न कहीं मुद्रा के माँग में कमी हो जाती है। Will and Jauncy के अनुसार, सदस्य बैंकों के बीच पारस्परि

सभी कार्यों को महत्व के क्रम में रखना कठिन है क्योंकि वे एक-दूसरे के पूरक है। इस तरह हम देखते है कि विभिन्न प्रकार के अपने कार्यों के द्वारा उनाज केन्द्रीय बैंक देश के मौद्रिक व्यवहार का प्राण हो गया है। यह Banking व्यवस्था की आत्मा है।

*